–लक्ष्मण रेखा।कहानी।

बहन काकी फर्ज की लक्ष्मण रेखा लांघ कर हमें दुख के सागर में डूब मरने को छोड़ गयी मां–पिताजी के सपनों की बारात को हम छोटे–छोटे भाई बहन किनारे तक ले जा पायेगे ।
नन्दू–काकी हमे मुसीबत के भंवर में छोड़ भागी है । चिन्ता ना कर कोई ना तिनके का सहारा तो मिल जायेगा । मां अस्पताल में मौत से जूझ रही है हम हम अपने पेट की आग से जूझते हुए गाभिन भैंस का पेट भरने के लिये संघर्ष कर रहे है । घर में ना हमें खाने के लिये अन्न है ना भैंस के खाने के लिये भूसा उपर से दरवाजे तक बाढ का पानी भरा है । ऐसे मुसीबत के वक्त में कैकेयी काकी हमें और अंधी दादी को बिलखता काकी छोड़कर शहर चली गयी
दुर्गा–भइया हिम्मत ना हार दादी कहती कहते है मुसीबत आदमी को मजबूत बनाने के लिये आती है ।
नन्दू–क्या खाक मजबूत बनेगे ना खाने को अन्न ना रहने को घर । बरसात में कही बैठने का ठिकाना नही ।
दुर्गा–क्यो नही है । इतना बड़ा घर नही है । मालूम है इसी घर की माटी ढोने में मां के सिर के बाल उड़े है । ठीक है चू रहा है । मां ठीक होकर आ जायेगी तो सब ठीक हो जायेगा । कहां फांका कर रहे है एक टाइम का मिल तो रहा है ना अगर घर में इतना भी अनाज नही होता तो क्या होता ? देख खाने की तकलीफ दो चार दिन में कम हो जायेगी ।
नन्दू–वो कैसे ?
दुर्गा–हलवाही वाले खेत में जो पाच बीसा धान रोपा है ,पकने लगा है ।इससे भैंस के चारे का इन्तजाम भी हो जायेगा ।
नन्दू–दीदी बाढ का पानी उतरने में ना जाने अभी कितने दिन लगने वाले है । पता नही धान बचेगा कि बह जायेगा बाढ में । दीदी कल से मैं गन्ना थोड़ा काट लाऊंगी । इससे भैंस को चारा मिल जायेगा हमें खाने को गन्ना ।
दुर्गा–गन्ना जूठवन के बाद खाते है ।
नन्दू–दीदी रस्म के चक्कर में पड़कर भूखों नही मरेगे । देखो मै गन्ना खाकर पेट भर लूंगा तो मुझे रोटी कम लगेगी ।दो रोटी बच जायेगी तो नन्हकी बहन के काम आ जायेगी ।
दुर्गा–नन्दू चिन्ता ना कर मां के आराम होते ही बाबू आकर अनाज का इन्तजाम कर जायेगे । अरे पगले काकी मुसीबत में छोड़कर भाग गयी तो क्या बस्ती वाले अपनी मदद नही करेगे क्या ? किसी के घर से सवाई पर अनाज ले आऊंगी ।
नन्दू–दीदी धीरे–धीरे बोले दादी सुनेगी तो रोयेगी । आखों से तो वैसे ही नही दिखता बेचारी का सिर उपर से दर्द करने लगेगा । चलो हम गेहूं पीस लेते है ।
दुर्गा– मैं पीस लूंगी । पहले सूख तो जाने दो ।
नन्दू–सूख गया होगा सबेरे का चूल्हे में डाली हो ना ।
दुर्गा–एक बार कह दी ना मैं पीस लूंगी । तुमको खाने से मतलब है ना ।
नन्दू–नही पीसने से भी । अकेले इतनी जांता कैसे रोज खीचती हो । मैं थोड़ी मदद कर देता हूं ।
दुर्गा–तुम्हारी मदद की जरूरत नही है । जैसे रोज पीसती हूं वैसे आज और रोज–रोज पीस लूंगी ।
नन्दू–ठीक है । मै भैंस के चारा का इन्तजाम करके आता हूं । भूसा भी खत्म होने वाला है।
दुर्गा–सब ओर पानी भरा है कहां घास मिलेगी ?
नन्दू–दीदी सड़क के किनारे से बरसाती घास और पोखरी में से करेमुवां काट लाता हूं ।
दुर्गा–नही पोखरी में मत जा हाथी के डूबने भर को पानी है ।
नन्दू–दीदी मुझे तैरने आता है । तू चिन्ता ना कर । हमारे और तुम्हारे उपर दो छोटी बहनो दादी और भैंस की जिम्मेदारी है । देखो भूख से भैंस कैसे चिल्ला रही है ?
दुर्गा–हां वो तो है पर करोगे क्या इस बाढ में ? कहां से घास काटकर लाओगे?खेतो में कमर तक पानी भरा है ।

नन्दू–बांस की पत्तियो तोड़ लाता हूं । वही काट कर भैंस को खिलाता हूं ।
दुर्गा–बरसात में बांसों पर सांप होते है ।
नन्दू–दीदी डराओ नही ।मैं बांस की पत्तियां तोड़ लाता हूं ।
दुर्गा–इतनी तेज बरसात में मत जा । थोड़ा थमने दो ।
नन्दू–पन्द्रह दिन से नही थमी तो आज थम जायेगी ।
दुर्गा–रूक मै फिर टोटका करती हूं ।
नन्दू–वही तवा और मुसर अंगना में फेकोगी । रहने दो मुसर सड़ जायेगा चार दिन के बाद धान कैसे कूटोगी ?
दुर्गा– जा मैं हारी ।
नन्दू–जा रहा हूं भैंस के पेट की पूजा का इन्तजाम करने के लिये ।
दुर्गा–भईया ध्यान से बांस पर चढना । बरसात में बांस फिसलेगा । पानी से बचने के लिये कोटियां से सांप भी बांस पर चढते हैं । चौंकन्ना रहना ।
नन्दू–दीदी डराओ नही । मैं रख लूंगा ध्यान । तुम आराम करो जब तक मैं आता हूं । चारा काटकर गेहूं पीसवा दूंगा ।
दुर्गा– जा गेहूं पीसने की चिन्ता न कर । मै पीस लूंगी ।
नन्दू–नही अकेले मत पीसना । हम दोनो पीस लेगे मिलकर ।
दुर्गा–ठीक है तू आ तो सही ।
नन्दू भैंस के चारे के लिये बांस की पत्ती तोड़ने चला गया । बहन के बताये अनुसार वह सम्भल–सम्भल कर ढेर सारी पत्तियां तोड़कर उतरने लगा इसी दौरान उसका पैर फिसल गया और एक बांस से दूसरे बांस पर जा गिरा । नन्दू की जांघ में छ' इंच उपर से कटी कटी कैन की ठूठ घूस गयी । बेचारा आधे घण्टे तक बेहोश बांस पर लहूलुहान लटका रहा । होश आने पर पोखरी में खून से सन्ने कपड़े को धोया खुद नहाया । इसके बाद बांस की पत्तियों का बोझ लेकर घर पहुंचा । बोझ चारा काटने वाली मशीन के पास पटक कर दीदी दी आवाज देने लगा । दुर्गा दौड़कर आयी । दुर्गा के बाहर आते ही नन्दू बोला दीदी ये पत्तियो मशीन में लगा दो मैं मशीन खींच लेता हूं । नन्दू मशीन खींचने लगा दुर्गा लगाने लगी । थोड़ी देर में चारा कट गया । नन्दू पत्तियों का हरा चारा और तनिक भूसा मिलाकर छिंटा भरा और भैंस की हौद की ओर लपका । नन्दू की जांघ से तर–तर चू रहे खून को देखकर दुर्गा जोर से चिल्लायी अरे बाप रे रूक नन्दू ये क्यो हो गया ?
नन्दू–कहां क्या हो गया दीदी?
दुर्गा–तेरे पैर खून से लथपथ है तुमको पता नही ?
नन्दू–बांस की कैन धंस गयी थी । ठीक हो जायेगा ।
दुर्गा–रख छिंटा मैं चारा डालती हूं तू खटिया पर लेट जा ।दुर्गा नन्दू से छिंटा छिनकर भैंस को चारा डालकर भैंस को हौदी लगायी । इसके बाद नीम से पत्तियां तोड़ा उबाली जख्म साफ करके फिटकर पीसकर घाव में भरी । ये सब करने के बाद नन्दू को डांटकर बोली तू सुबह तक खटिया से नही उठेगा ।
नन्दू–गेहू अभी पीसना है ।
दुर्गा–पीस गया है । तू चिन्ता ना कर तुमको खटिया पर रोटी दूंगी । इतना गहर जख्म है तुमने मुझे बताया तक नही । कितना खून बहा होगा । छिपने के लिये तू पोखरी में नहा–धोकर आया है ना । कितनी देर तक बांस पर लटका था । पत्ती–सत्ती छोड़कर नही आ सकता था । कुछ हो जाता तो हम कैसे जीते । बापू मां को लेकर कोसो दूर शहर के अस्पताल में पड़े है ।तुम्हारी ये हालत ।
नन्दू–दीदी ठीक हो जायेगा तनिक सी तो चोट है ।
दुर्गा–पूरी अंगूरी चली जा रही है घाव में । भईया फिटकरी तो मैं ही भरी हूं ना मुझे पता है कितनी गहरी घाव है । तू इतनी गहरी घाव के साथ इतना काम कैसे किया है । मुझे तो खून देखकर चक्कर आने लगा था । मां बापू को याद कर–कर तो सम्भली हूं ।खटिया पर पड़े रहो उठना नही मेरी कसम है तुमको । मैं सब कर लूंगी । बहुत खून तुम्हारे शरीर से बह गया है ।काश काकी होती भले ही कुछ ना करती पर सहारा तो रहती ।

नन्दू–वो क्या सहारा बनेगी । मुसीबत के दलदल में ढकेलकर भाग गयी । थी तो कौन सहारा बनती थी जो अब कर रहे तब भी यही करते थे । एक आदमी की और टहल बजानी पड़ती थी । हम भाई–बहन एक दूसरे के सहारे है ,दादी का आर्शीवाद है क्या यह कम है ?
दुर्गा–तू लेटा रहा मैं रोटी बनाती हूं ।
नन्दू–दीदी मेरी वजह से तुमको कितनी तकलीफें उठानी पड़ रही है । बाबूजी मां को लेकर महीनों अस्पताल पड़े है । मां की बीमारी ने तुम्हारे ब्याह की हंसुली की बलि भी ले ली पर अभी मां ठीक भी नही हुई । दीदी मुझे तो डर लग रहा है मां को कुछ हो गया तो हमारा क्या होगा ?
दुर्गा–अशुभ बाते जबान पर मत ला । भगवान अपने भगवान होने की लक्ष्मण रेखा नही लांघेगे । मां ठीक होकर जल्दी ही आ जायेगी । भगवान कोई अपने काका–काकी जैसे थोड़े ही है कि अपने मतलब के लिये लक्ष्मण रेखा तोड़ देगे । भगवान भगवान होते है उन्हें सब की चिन्ता बराबर होती है । कोई गलता हो गयी होगी,उसकी सजा पूरी होते ही मां देखना बिल्कुल ठीक होकर आ जायेगी । अभी तो खुद दर्दमें कराह रहा है । मां कि चिन्ता घर की चिन्ता सब भगवान के उपर डालकर आराम से लेटा रहा ।तुम्हार घाव में जो फिटकरी भरकर बांधी हूं गिरने मत देना। तुमको खटिया से उठने की जरूरत नही है ।
नन्दू–दीदी तू तो मां की तरह समझा रही हो ।
दुर्गा–तुम्हारे भले के लिये कह रही हूं । खटिया पर पड़ा रह । मैं रोटी बनाकर तुम्हारे लिये खाना लेकर आती हूं कह कर दुर्गा खाना बनाने में जुट गयी । खाना बनाकर सबसे पहले दादी को दी फिर नन्दू को देकर भैंस और बकरी को मड़ई में बांधकर हाथ पांव धोकर तीनो नन्ही बहनों गंगा,जमुना और सरस्वती को खाना परोसकर खुद खाना खाने बैठ गयी । खाने के बाद बर्तन धोकर घर की सफाई की फिर वही भी थकी–मांदी सो गयी । ऐसे ही इन पांचो भाई–बहनों का दिन बूढी दादी के साथ कभी खाकर तो कभी फांके में बित रहा था ।
दो महिनों के बाद अचानक गांव की पगडण्डी पर शाम के वक्त ईक्का खड़ा हुआ । ईक्का के खड़ा होने के आहट पाकर नन्दू दौड़ पड़ा । ईक्का के पास पहुंचते ही वह उछल पड़ा और जोर से चिल्लाया दीदी बाबूजी मां को लेकर आ गये । हरिचरन और चन्द्रकला ने नन्दू को गले लगा लिया इतने में दुर्गा और तीनो नन्हकी भी पगडण्डी की ओर दौड़ बूढी दादी दम्यन्ती आंखे फाड़–फाडकर पगडण्डी की ओर देखने लगी । हरिचरन और चन्द्रकला पांचों बच्चों के साथ घर पहुंचे दोनो पति–पत्नी बूढी मां दम्यन्ती के पांव छूये । बूढी दम्यन्ती ने आर्शीवाद की गंगा बहा दी । काफी देर के इन्तजार के बाद चन्द्रकला पूछी नन्दू कैकेयी कहां है ।
नन्दू– मां काकी तो तुम्हारे अस्पताल जाने के पांच दिन बाद शहर चली गयी ।
हरिचरन–क्या ?
दुर्गा–हां बाबू ?
चन्द्रकला–मुसीबत के दिनों में अपनों ने साथ छोड़ दिया ।
हरिचरन–भगवान ने हमारे बच्चों की रक्षा की है । देखो घर–द्वार जैसा तुम छोड़कर गयी थी वैसा ही दमक रहा है । देखो तुम चिन्ता छोड़ो दवाई खाओ आराम करो । तुम सकुशल आ गयी हो कल से मै सब काम सम्भाल लूंगा। कालीचरन को अपनी घरवाली को शहर बुलाना ही था तो मेरे घर आने तक इन्तजार कर लेता । अरे मैं मना करता क्या ? मुसीबत में भाई ने रिश्ता खत्म कर दिया ।
चन्द्रकला–देवरानी कैकेयी तो एक मां थी मेरे बच्चों को अनाथ सरीखे छोड़करचली गयी मुसीबत के समय में जबकि ऐसे समय में तो पराये मदद करते है।वाह रे कैकेयी तू भी फर्ज की लक्ष्मण रेखा लांघ गयी ।
हरिचन–लांघ गयी तो लांघ गयी । हमारे बच्चों के सिर पर उनकी दादी मां का हाथ था और अब उनकी मां भी आ गयी । देखना सारी बलायें छूमन्तर हो जायेगी ।
चन्द्रकला–भगवान ऐसा ही करे तब ना ?
हरिचरन–विश्वास रखों मौत के मुंह से निकल कर आयी हो।भगवान का चमत्कार नही तो और क्या है ?
चन्द्रकला–विश्वास पर तो जी रहे है कल हमारा भी होगा ।
हरिचरन–जरूर होगा ।

धीरे–धीरे समय बितने लगा ।दुर्गा का गौना गंगा,जमुना और नन्दू का ब्याह भी हो गया ।नन्दू साल दर साल एक–एक कक्षा आगे बढते–बढते बी.ए. तक की परीक्षा पास कर गया । बी.ए.पास कर वह नौकरी की तलाश में शहर सालों भटकने के बाद नौकरी भी मिल गयी ।बेटे के नौकरी मिलते ही हरिचरन के घर भी खुशहाली बरसने लगी । खुशहाली की पूरी बयार चलती इसके पहले ही चन्द्रकला ने हमेशा के लिये आंखे मूंद ली । हरिचरन भी बूढे हो गये अब दरवाजे पर बैठे रहते थे । इसी बीच रात के अंधेरे में कालीचरन आ धमका और पालगी भईया कहकर हरिचरन के सामने खटिया पर बैठ गया । हरिचरन चुपचाप पहचानने की कोशिश कर रहे थे । इतने में कालीचरन बोला पहचाने नही क्या ?
हरिचरन–नहीं कौन हो भाई ?
मैं कालीचरन .....
हरिचरन–कौन कालीचरन ?
तुम्हारी–भाई ।
हरिचरन–चालीस साल के बाद अचानक भाई की याद कैसे ?
कालीचरन–हक हिस्सा छोड़ तो नही सकता ना ।
हरिचरन–कैसा हक हिस्सा ।
कालीचरन–महलनुमा घर में हमारा भी तो हिस्सा बनता है कि नही ।
हरिचरन–बाप दादा की कमाई तो यह घर है नही । नन्दू की कमाई का घर है इसमें कैसा हिस्सा ? हिस्सा लायक तुमने कुछ किया भी तो नही है । मेरे बच्चों को मुसीबत की दरिया में ढकेल कर अपनी घरवाली को बुला लिये । चालीस साल के बाद अब आये हो वह भी छाती में खंजर भोकने ।
कालीचरन–हक हिस्सा लेना खंजर भोगना है क्या ?
हरिचरन–किसी के खून पसीने की कमाई पर कब्जा और क्या है ।
कालीचरन–फैसला कल की पंचायत में हो जायेगा ।
हरिचरन–कैसी पंचायत ?
कालीचरन–हिस्सा लेने के लिये पंचायत बुलाउगा की नही । गांव के प्रधान और कुछ मानिन्दों की पंचायत कल सबेरे बुलाया हूं ।घर पर रहना कही जाना नही ।
हरिचरन–अरे हमारे घर पंच परमेश्वर आयेगे तो भला मै घर छोड़कर कहीं जाउंगा क्या ?
कालीचरन–ठीक है सुबह आता हूं पंचों को लेकर तब तक स्वर्ग का सुख भोग लो ।
हरिचरन–ये सुख मेरे बेटवा का दिया हुआ है । भगवान के अलावा कोई नही छिन सकता । तुम जाओ कल पंचो के सामने अपनी बात रखना ।
कालीचरन–तुम हिस्सा नही दे रहे हो तो पंचायत का दरवाजा तो खटखटाना ही पड़ेगा ।
हरिचरन–पंच परमेश्वर का फैसला मुझे मान्य होगा । अब तो यहां से जा ।
कालीचरन–ठीक है जा रहा हूं । कल पंचायत में मिलूंगा कहकर कालीचरन चला गया और सबेरे गांव के कुछ मानिन्दों और प्रधान को लेकर हरिचरन के दरवाजे पर आ धमका । हरिचरन पहले से ही पंचों के लिये हुक्का तम्बाकू का इन्तजाम कर बाट जोह रहा था । पंचायत बैठ गयी ।
प्रधान–हरिचरन काका ये सफेद बाल वाले तुम्हारे सगे भाई है ।
हरिचरन– हां ।
प्रधान–कुम्भ के मेले में खो गये थे क्या ?
हरिचरन–नही चालीस साल के बाद शहर से गांव आया है वह भी इस रूप में ।जब ये शहर गया था तो प्रधानजी तुम स्कूल जाना शुरू ही किये होगे ।
प्रधान–खैर पुरानी बाते छोडें ये तो बताओ कि काका तुमको मालूम है ये पंचायत क्यों बुलायी है ये चालीस साल के बाद मिलने वाले कालीचरन काका ने ।
हरिचरन–हां । नन्दू की कमाई में हिस्सा लेने के लिये ।

प्रधान–काका आपका क्या विचार है ।
हरिचरन–भतीजे की कमाई में काका का हिस्सा तो बनता नही ।असली फैसला तो आप पंचों का करना है ।पंचों का कोई भी फैसला हमे मान्य होगा ।
प्रधान–नन्दू को भी ।
हरिचरन–बाप के आदेश की लक्ष्मण रेखा नही पार कर सकता ऐसा मेरा विश्वास है ।
प्रधान–ठीक है कालीचरन काका से भी कुछ बात कर लेते है । हां कालीचरन काका चालीस साल के बाद गांव आये है सही है क्या ?
कालीचरन– हां ।
प्रधान–बाप दादा की कोई छोड़ी चल अचल सम्पति है क्या ?
कालीचरन–पता नही । चालीस साल से तो मैं परदेस कर रहा हूं ।
प्रधान– क्यों हरिचरन काका कोई दौलत है क्या पुरखों की ?
हरिचरन–जमीन तो जमींदारो ने अपनी आंख खुलने के पहले ही जमींदारों की भेट चढ । बाप आजादी के युध्द के दिनों में गायब हो । पंचों आप सभी तो जानते ही है कैसे–कैसे मेरे मुसीबत के दिन कटे है ? नन्दू की कमाई से तनिक खुशी मिलने लगी है तो उस पर भी गिध्द नजर लग रही है ।अरे कभी गट्टा भी हमारे बच्चों को नही दिया होगा ये कालीचरन आज वही मेरे बच्चे की कमाई में हिस्सा लेने के लिये पंचासत बुला दिया ।
प्रधान–मतलब बाप दादा की कोई दौलत नही है। क्यों कालीचरन काका हरिचरन काका ठीक कह रहे है ?
कालीचरन–ठीक कह रहे होगे पर मै कहां जाउं ।
प्रधान– अरे काका शहर के बंगले में और कहां ?इतने बड़े आसामी होकर आदमियत की लक्ष्मण रेखा क्यों पार कर रहे हो । हरिचरन काका जीवन भर दुख दुख उठाये है पूरा गांव जानता हूं उनकी खुशी पर क्यों ग्रहण बन रहे हो । अच्छा कालीचरण काका ये बताओ कि तुम अपने शहर के बंगले में हरिचरन काका को हिस्सा दे रहे हो क्या ?
कालीचरन–नही
प्रधान–भाई की कमाई में भाई का हिस्सा नही बनता तो क्या भतीजे की कमाई में काका का हिस्सा बनेगा ।तुम्हारा हिस्सा नही बनता कालीचरन काका ।
कालीचरन–जन्मभूमि छोड़ दूं?
प्रधान–जन्म भूमि से इतना मोह है तो खरीद लो दस–पांच बीघा जमीन और बना शहर जैस बंगला । कालीचरन काका तुम तो हरिचरन काका के कर्जदार हो बेचारे हरिचरन काका ने अपनी मेहनत मजदूरी से तुमको पाला–पोसा,ब्याह गौना किया और तुम सहारे लायक हुए तो नजरे फेर लिये । भला ही मै अबोध था पर पूरा गांव तुम्हारे बारे में जानता है तुमने कैसा भैय्पन निभाया है हरिचरन काका के साथ । अरे ऐसा तो दुश्मन भी नही करेगा जैसा तुम कर रहे हो ।कालीचरन काका पंच अन्याय नही करेगें ।
कालीचरन–प्रधान ठीक है मेरा हिस्सा नही बनता है तो देखना कैसे बनाता हूं ।
प्रधान–काका लक्ष्मण रेखा मत तोड़ना । पंचो के न्याय के आगे कालीचरन की गिध्द नजरे फिर कभी नही टिकी ।